



Original Article

अकेलेपन की नियति में पहचान का संकट:

(‘मै पायल- महेंद्र भीष्म के थर्ड जेंडर उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

प्रा. डॉ. योगेश विठ्ठल दाणे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

एस.एस. जी. एम. महाविद्यालय कोपरगाव, जिला - अहिल्यानगर

Manuscript ID: IJAAR-C130330
 ISSN: 2347-7075
 Impact Factor – 8.141

Volume - 13
 Issue - 3
 January – February 2026
 Pp. 150 - 157

Submitted: 22 Jan.2026
 Revised: 30 Jan. 2026
 Accepted: 10 Feb. 2026
 Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
 प्रा. डॉ. योगेश विठ्ठल दाणे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785778

DOI Link:
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785778>

सार:

21 भारत के प्राचीन ग्रंथों में समस्त सृष्टि की उत्पत्ति एवं उसके विकास की प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है। जिसमें स्त्री - पुरुष के साथ ही समाज में विभिन्न वर्ग - वर्ण एवं तृतीय पंथीय संतान की उत्पत्ति की मिथक अवधारणाएं मिलती हैं। रामायण काल में किन्नरों की प्रत्यक्ष उपस्थिति के प्रमाण वाल्मीकि कृत रामायण तथा महाभारत में अज्ञातवास प्रसंग में शिखंडी का उल्लेख प्रायः मिलता है। महाभारत के कुछ संस्करणों में अर्जुन के पुत्र ' इरावत ' का उल्लेख मिलता है, जो आज भी किन्नर समुदाय के आराध्य देव हैं। प्राचीन भारतीय चिंतन में सृष्टि का उद्भव पुरुष (चेतना) और प्रकृति (ऊर्जा) के संयोग से माना गया है। संसार में स्त्री -पुरुष एक - दूसरे के पूरक माने गये हैं। लंबे समय तक सामाजिक संरचना को केवल ' स्त्री ' और पुरुष के चश्मे से देखा गया लेकिन सामाजिक वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक है। समाज की पूर्णता केवल स्त्री पुरुष की होने मात्र में नहीं बल्कि समाज के हर स्तर पर उनकी भागीदारी और विविधता में समाहित है। परंतु समाज में लैंगिक विकृति के लोग भी दिखाई पड़ते हैं तो उनके प्रति सामाजिक सोच और रवैया बहुत ही चिंताजनक है। उन्हें समाज में सहज भाव से स्वीकार नहीं किया जाता। पितृसत्ता द्वारा तय किए गए मानदंड, साँच्चों में फिट न बैठनेवाले ऐसे तमाम लोगों को परिवार एवं समाज द्वारा अपमानित- बहिष्कृत होने की नियति झेलने को बाध्य होना पड़ता है। 'किन्नर' या ' हिजड़ा' होना कोई अपराध नहीं है परंतु उसके लैंगिक मानदंडों को आधार मानकर उसे पौरुषहीनता से जोड़ा जाता है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। पौरुषता का अभाव अपने आप में गाली बन जाता है। समाज द्वारा स्थापित मर्दानगी के व्यापक मानक माने जाते हैं, उनमें किसी परिवार में कोई ' हिजड़ा' बच्चा जन्म लेता है, तो उसके माता-पिता एवं परिवार के लिए यह कलंक का विषय बन जाता है। सामाजिक जीवन में उसे पिता के पुरुषत्व से जोड़कर देखा जाता है। हमारे सामाजिक जीवन में यह पता नहीं है कि किन्नर जन्म प्राकृतिक प्रक्रिया है जैसे अन्य अवयवों का अभाव और विकृत रूपों में जीवों का निर्माण, उसी तरह यह लिंग न्यूनता है। इस बात के लिए सामाजिक नवजागरण प्रचार - प्रसार जरूरी है। २१वीं सदी के वैज्ञानिक युग में तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग भी किन्नर जीवन को पिछले जन्म का पाप मानकर किन्नरों को हेय दृष्टि से देखते हैं और मनुष्य की सामान्य कोटि से बाहर रखते हैं, जिसके कारण किन्नरों को वर्तमान में सामाजिक जीवन में अकेलेपन की नियति में अपनी पहचान का संकट झेलना पड़ रहा है और स्वयं की ' स्व ' के साथ-साथ सामाजिक पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। हमारे जीवन में ' किन्नर विमर्श' पर लिखना सभ्य समाज की निशानी नहीं मानी जाती है। परंतु संतोष की बात यह है कि किन्नर के प्रति समाज की यथास्थितिवादी सोच को दरकाने के लिए हिंदी साहित्यकारों ने



अपनी कलम चलानी शुरू की है। विभिन्न उपन्यास, कहानी शोध आलेखों ने साहित्यकारों के साथ-साथ पाठकों का ध्यान भी इस ओर आकर्षित हो रहा है। तृतीय पंथीय 'समाज के लिए यह आशा की किरण मानी जा सकती है। तृतीय वर्ग (थर्ड जेंडर) हमारे समाज का अभिन्न अंग है। जिसका अस्तित्व सदियों से रहा है किंतु जिसे पहचान और सम्मान के लिए एक लंबा संघर्ष करना पड़ा है। महेंद्र भीष्म द्वारा लिखित 'मैं पायल' आत्मकथात्मक उपन्यास है जिसमें किन्नर गुरु पायल सिंह के जन्म से लेकर किन्नर गुरु बनने तक के जीवन कथा-संघर्षों द्वारा प्रत्येक किन्नरों की व्यथा - संघर्ष को प्रतीकात्मक रूप में वर्णित किया गया है। 'मैं पायल' उपन्यास के विवेचन द्वारा किन्नर वर्ग की समस्याओं को समाज के सामने रखना और किन्नरों के प्रति समाज को मानसिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना ही इस शोधालेख का उद्देश्य है

मुख्य शब्द: किन्नर विमर्श, भारतीय समाज, प्राचीन सभ्यता, मिथक, लिंग भेद की अवधारणा, ट्रांसजेंडर, पहचान का संकट, हाशिए का समाज आदि।



Creative Commons



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. डॉ. योगेश विठ्ठल दाणे. (2026). अकेलेपन की नियति में पहचान का संकट: ('मैं पायल'- महेंद्र भीष्म के थर्ड जेंडर उपन्यास के विशेष संदर्भ में). *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 150 - 157. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785778>

प्रस्तावना:

साहित्य सदैव समाज का दर्पण है और आधुनिक दौर में व्यक्ति के भीतर व्याप्त अकेलापन और अंतःस की पीड़ा, अस्मिता की खोज, साहित्य के केंद्र में आ गयी है। ऐसा कहा जाता है क्योंकि साहित्य मानव की सबसे बड़ी सृजनात्मक खोजों में से एक है। वह सामाजिक है। सामाजिकरण की इसी प्रक्रिया के कारण वह समाज में हर 'मन' और 'जन' से जुड़ने की कोशिश करता है। यूँ देखा जाए तो मनुष्य को अपना जीवनयापन करने के लिए रोटी - कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है, और अपने मन का द्वार खोलने के लिए चुप्पियों को तोड़ती एक 'भाषा'। अगर यह नहीं तो मनुष्य जीवन की लाचारी की लिपि में तब्दील हो जाता है। साहित्य यही काम करता है, वह उस पांडुलिपि को लिखकर भाग्य बदलता है। भाषा, साहित्य और संस्कृति किसी भी राष्ट्र और समाज की विशेष पहचान के सूचक होते हैं। जहाँ भाषा उस देश

की संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था और विचारधारा किस तरह की है, यह बताती है। इसी प्रक्रिया में सामाजिकरण में भेदभाव पूर्ण प्रक्रिया, स्त्री और पुरुष का व्यवहार तय करती है।

दूसरी बात यह है कि जब से मानव समाज है, तब से हमारे समाज में व्याप्त स्त्री - पुरुष ही नहीं पाए जाते बल्कि स्त्री - पुरुष के बीच एक 'तीसरी पहचान' भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह 'तीसरी पहचान' अपनी अस्मिता को कायम रखने के लिए आज भी संघर्षरत है। यह वर्ग हमेशा जीवन जीने के लिए लंबे समय तक मुख्य धारा के विमर्श से ओझल रहा। विभिन्न विशेषणों और अपमान सूचक नाम से उनकी पहचान स्थापित कर दी जाती है। शारीरिक अपूर्णता के कारण वह समाज में तिरस्कृत और अपमानित है। वह प्राकृतिक मानवीय गुणों से वंचित होने के कारण ही विवाह जैसी पवित्र सामाजिक अनुष्ठान का हिस्सा भी नहीं हो सकते। जिससे उनके सामाजिक अस्तित्व के लिए बड़ा प्रश्न चिन्ह उपस्थित होता है। भारत में



हाशिए के समाज का दायरा बहुत विस्तृत है। दलित, आदिवासी, तृतीय लिंगी समुदाय यहाँ तक की वृद्ध, स्त्री - पुरुष तक इस हाशिए के दायरे में आते हैं। २१वीं सदी के कथा साहित्य में 'किन्नर विमर्श' लंबे समय से मुख्य धारा के विमर्श से ओझल रहा। 'मैं पायल' वर्ष २०१६ में प्रकाशित महेंद्र भीष्म कृत उपन्यास में किन्नरों के प्रति मुख्य धारा समाज का नजरिया, उनका पारिवारिक बहिष्कार तथा पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में हाशिए पर खड़ा किन्नर तथा स्त्रियों के संघर्ष का विस्तृत वर्णन हुआ है।

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श:

सदियों से हिजड़ा समुदाय को अन्य की नजरियों से देखने और समझने के लिए अभ्यस्त भारतीय समाज नई सदी में एकाएक जागरूक नहीं हुआ है। वेद-पुराण इतिहास ग्रंथों में यक्ष-गंधर्वों के साथ किन्नरों का उल्लेख संगीत नृत्य को पसंद करने वाले किन्नरों को धार्मिक देवताओं के समकक्ष मानने के अर्थ में हुआ है। महाभारत के चरित्र शिखंडी और बृहन्नला के संदर्भों को रेखांकित किया गया। मुस्लिम शासनकाल में हिजड़ों की स्थिति को जचने की बात भी हमारे बौद्धिक समाज के सामने आयी। हिंदी सिनेमा में हिजड़ों के चरित्र प्रायः हँसी मजाक का पात्र बनकर ही पेश किया गया है। सबसे बड़ी बात यह हुई की साहित्य में थर्ड जेंडर को विमर्श के दायरे में लाया गया। साहित्य ने उनके व्यथा को वाणी देने का कार्य किया। मध्य एशिया के पुरातन साहित्य से लेकर वात्स्यायन के कामसूत्र और अरब की तिलिस्मी, अय्यारी साहित्य में भारतीय जैन और बौद्ध ग्रंथों में भी पाया जाता है। हिंदी साहित्य में २० वीं सदी तक कुछ भी नहीं लिखा गया था।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के 'चॉकलेट' उपन्यास तथा शिवप्रसाद सिंह की एकाध कहानी तथा बिंदा महाराज (शिव

प्रसाद सिंह) खलीक अहमद बुआ (राही मासूम राजा) किन्नर (एस.आर.हरनौत) ई. मुरदन का गाँव (कुसुम अंसल) बीच के लोग (सलाम बिन रज्जाक) कौन तार से बीनी चदरिया (अंजना वर्मा) आदि मौलिक कहानियाँ और हमजिनस (करतार सिंह दुग्गल) ऊँचा बुर्ज लाहौर का (नवतेज पुआधी) मटकनलाल खोजा (मोहन भंडारी) उसका बाप (रामस्वरूप अनखी) सती (मीना वर्मा) मलका (हरजीत कौर) आदि अनेक अनूदित कहानियों में हिजड़ों के दुःख - दर्द को अभिव्यक्त किया है।

समकालीन दौर में नीरजा माधव का 'यमदीप' महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' और 'मैं पायल' प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली' अनुसया त्यागी कृत 'मैं भी औरत हूँ' चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नंबर २०३, नालासोपारा' एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें एक कदम आगे बढ़कर हिजड़े और समलैंगिकों को सम्मिलित रूप से प्रतिपाद्य विषय बनाया गया है।

मैं पायल:

'मैं पायल' आत्मकथात्मक उपन्यास है। २०१६ में महेंद्र भीष्म द्वारा लिखित किन्नर जीवन को आधार बनाकर लिखित महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें पायल उर्फ जुगनी की जीवन की संघर्ष पूर्ण गाथा है। यह उपन्यास पायल सिंह के संघर्षों की गाथा न होकर संपूर्ण किन्नर समाज के संघर्षों की कथा का प्रतीक बन जाती है। पायल सिंह के माध्यम से महेंद्र भीष्म ने उसे वर्जित दुनिया के द्वार खोले हैं, जहाँ केवल तालियों की गुँज नहीं बल्कि सिसकियाँ का अंबार है। यह उपन्यास किन्नर जीवन की अस्मिता की तलाश का महाकाव्य है, जिसमें उपन्यासकार ने पायल सिंह के अनुभव के माध्यम से तमाम किन्नरों की संघर्षमयी दास्तान को आवाज देने का



भरसक प्रयास किया है। अनूठी पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखे गये औपनिवेशिक कथा किन्नर से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को जन्म तो देती है परंतु सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न भी उपस्थित करती हैं। यह औपन्यासिक कृति पढ़ने पर पाठकों की सोई संवेदना को लेखक झकझोर कर रख देता है। कुल ११९ पृष्ठ का उपन्यास २१ कथाक्रमों में विस्तारित है, जिसमें पायल सिंह के जीवन संघर्ष को महेंद्र भीष्म ने संवेदना की स्याही से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के राजमऊ गाँव में राज्य परिवहन निगम में काम कर रहे बस ड्राइवर राम बहादुर राय और उनकी पत्नी शांति देवी इन दोनों दांपत्य के मध्यमवर्गीय परिवार में किन्नर बच्चे पायल का जन्म २६ अप्रैल १९८० को पांचवी संतान के रूप में होता है। मध्यमवर्गीय परिवार में किन्नर बच्चे का जन्म होते ही पारिवारिक उत्सव मातम में बदल जाता है क्योंकि उनके घर में विकृत लिंग के शिशु का जन्म होता है। भारतीय समाज में किसी परिवार में एक हिजड़े बच्चे का जन्म होना उस परिवार के पिता के पुरुषत्व के साथ जोड़ दिया जाता है, लेकिन सामाजिक दबाव और पूर्वाग्रह से पिता - संतान पवित्र संबंध जन्म से ही दुर्बल हो जाता है। जिसकी पीड़ा उस नवजात शिशु को भोगनी पड़ती है। वह नवजात बालक स्वयं मानसिक रूप से टूट जाता है क्योंकि उसे अपने परिवार से ही स्वयं प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। पायल सिंह ने भी अपने ही परिवार में 'हिजड़ा' शब्द स्वयं अपने पिता के मुख से सर्वप्रथम सुना था। हिजड़ों अथवा किन्नर के प्रति सामाजिक दुर्भावना पायल के पिता के भीतर भी कूट-कूट कर भरी हुई थी। पायल अपने पिता के लिए अभिशप्त संतान थी अपने पिता द्वारा दुत्कार की कथा को पायल ने इस उपन्यास में कई जगह बताया है

"जब कभी पिताजी दारू के नशे में कोसते, गाली देते, ये जुगनी ! हम क्षत्रिय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा

है..... आदि जाने क्या-क्या वे बकते रहते थे। 'हिजड़ा' यह शब्द सबसे पहले मैं उन्हीं के मुख से सुना था, पर तब मैं इस शब्द के मायने से बिल्कुल अनभिज्ञ थी। जैसे करमजली, नाशपिटी, हरामजादी आदि विशेषण जो भी मेरे लिए प्रेरित होते और जिनका भी मैं अर्थ नहीं जानती थी, बस इतना ही समझती थी कि हिजड़ा भी गाली के रूप में प्रयोग में लाया जाने वाला कोई शब्द होगा।"

पायल का बचपन बहुत ही कष्टदायक रहा, पिता और भाई राकेश के द्वारा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना उसे सहन करनी पड़ी। "नशे में पिताजी का चेहरा वीभत्स हो जाता, जो हाथ लगाता उसी से पीटना शुरू कर देते थे तब तक जब तक वह टूट न जाए या स्वयं थक-हारकर नशे की झोंक में लडखड़ा कर गिर ना जाए।"² 'मैं पायल' उपन्यास की सबसे पहले और बड़ी समस्या 'अस्वीकार्यता' है। जब समाज और परिवार एक नवजात को उसकी शारीरिक बनावट के कारण ठुकरा देते हैं तो वहीं से मानव अधिकारों का हनन शुरू हो जाता है। मध्यम वर्गीय परिवार में जब पायल नाम का बच्चा जन्म लेते ही उसे अभिशाप मानकर चार दिवारी के भीतर दफन कर देना चाहते थे सब, तब किन्नर के रूप में जन्म लेने के कारण पायल को बार-बार अपने पिता के नफरत और आक्रोश का शिकार होना पड़ता है। हद तो तब हो गई जब पायल के पिता उसे स्त्री रूप में देखकर उसे मारने पीटने से लेकर मार डालने तक की कोशिश करते हैं। एक बार तो पायल को उसके पिता ने गले में रस्सी डालकर मारने का भी प्रयास किया जिसमें पायल बुरी तरह घायल हुई थी पायल कहती है कि - "समय का मुझे ध्यान नहीं रहा था शायद देर रात मुझे अपने शरीर का होश आने पर भान हुआ। मेरे गले में रस्सी बँधी हुई थी, जिसका दूसरा छोर म्यारी से बँधा था। खपैरैल के रास्ते चाँदनी का रात का प्रकाश कंडे व घास से भर उसे कमरे में आ रहा था। मुझे पूरी तरह से



होश नहीं आया था पर अंदाजा तो हो ही रहा था कि म्यारी से रस्सी का एक छोर बाँधकर मुझे मारने के लिए रस्सी के दूसरे छोर का फंदा मेरी गर्दन में बाँध पिताजी ने मुझे फाँसी दे दी थी।"³

किन्नर समुदाय के लिए सबसे दुःखद पहलू उनका अपने परिवार द्वारा किया गया त्याग है। समाज के डर से माता-पिता अपने बच्चों को कलंक मानकर घर से निकाल देते हैं ऐसे प्रसंग से किन्नर पायल के मन में विचार आता है। "फिर पीटी जाऊँ, मारी जाऊँ इससे अच्छा है, मैं खुद ही न मर जाऊँ और फिर एक बार जो मेरे मन में यह विचार आया तो फिर मरने की इच्छा गहराती चली गई।"⁴

पिता की रोज मारपीट गाली- गलौज से पायल की माँ किसी तरह उसे बचा लेती है और अपने पिता की क्रूरता से बचने के लिए घर छोड़कर जाने की सलाह देती है। पायल अपने पिता की क्रूरता और नफरत से बचने तथा परिवार की लाज तथा समाज में इज्जत बनाए रखने के लिए घर छोड़कर भाग जाती है। घर छोड़ने के बाद पायल को समाज में नई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। सबसे पहली समस्या पायल के सामने भूख की मार को सहना पड़ता है बाद में बेरोजगारी और अकेलेपन की पीड़ा में पायल को यौन शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। "मैं दातुन बेचकर रोज सुबह एक से दो रुपये तक कमाने लगी, जो मेरे दिनभर की भोजन के लिए पर्याप्त रहता था। रात भिखारी के पास पहुँच जाती वह जो भी कुछ खा रहे होते मुझे जरूर खिलाते।"⁵

भीख माँगने वाले हिजड़े के गिरोह से पायल का अपहरण किया जाता है और उनके टोली द्वारा उसे उनका हिस्सा बनने के लिए मजबूर किया जाता है। भीख माँगने वालों के गिरोह से वह बाल सुधार गृह पहुँचती है। माँ और भाई उसे

वहाँ से ले जाने के लिए आती है कुछ दिनों के लिए पायल की माँ उसे अपनी बहन के पास रखना चाहती है, तो उसकी बहन साफ इन्कार कर देती है। इतना ही नहीं वह मौसी के मुँह से हिजड़ा शब्द सुनकर पायल के हृदय को गहरी चोट पहुँचती है। पायल की मौसी पायल की माँ शांतादेवी से कहती है - "ना दीदी, ना मैं रख सकूंगी तुम्हारे इस हिजड़े जुगनू को। 'दीदी! तुम जितने दिन चाहे रहो, पर तुम्हें उसे अपने साथ ही लेकर जाना होगा तुम्हारे रहने तक जुगनी हमारे पास रह सकती है पर तुम्हें उसे अपने साथ ही लेकर जाना होगा मैं एक हिजड़ा बच्चों को अपने साथ कतई नहीं रख सकती हूँ।"⁶ लैंगिक दृष्टि से भिन्नता वाले अन्य लोगों को समाज में जो ममता और संरक्षण मिलता है उसे एक किन्नर ही नहीं उनके परिवार भी वंचित होते हैं। खून का रिश्ता भी यहाँ निरर्थक है। समाज में लैंगिक समानता की बात प्रायः होती रहती है परंतु प्रत्यक्ष रूप से सभी लोग किन्नर की तरफ घृणा की दृष्टि से और शंका की दृष्टि से ही प्रायः देखे नजर आते हैं। ऐसे सामाजिक मानसिकता और उपेक्षा भाव के दबाव से कुछ ले जानेवाले थर्ड जेंडर समुदाय को अपनी पहचान बनाने के लिए हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। पेट पालने के लिए वह भिखारी के साथ और संतोष सिंह के अप्सरा टॉकीज में काम करती है। टॉकीज में प्रमोद नाम का लड़के के अभद्र व्यवहार से बचकर वह गुरु माई के नेतृत्व वाले किन्नर समुदाय में शामिल होती है गुरु माई पायल को किन्नर बनकर नाच गाने के लिए विवश करती है, लेकिन पायल आत्मनिर्भर होकर जीने की जिद्दी है लेकिन गुरु माँ नहीं मानती है पायल कहती है-

"मैं हिजड़ा नहीं हूँ, तुम लोगों की तरह मैं एकदम सही लड़की हूँ। तब मोना किन्नर और पायल के बीच संघर्ष होता है किन्नर मोना पायल को नाच गाने के लिए विवश कर उसे मारती पिटती है और कमरे में बंद कर देती है। पायल कहती -



"क्या किन्नर होना अपराध है, जो उसे उसके स्वभाव के विपरीत कार्य करने के लिए विवश किया जा रहा है। क्या एक किन्नर को बधाई टोली के अलावा अन्य कार्य - दायित्व नहीं सौंपे जा सकते। मैं टॉकीज में प्रोजेक्टर चलाती हूँ। उसके पहले अन्य छोटे - मोटे कार्य भी मैंने किए हैं फिर मुझे क्यों बाध्य किया जा रहा है कि मैं इनकी तरह ताली पीटूँ, ढोलक बजाऊँ नाचूँ और बधाई गाऊँ।" ⁷

अब जुगनी पायल के रूप में गुरु माई के समक्ष पहुंचकर उसे बताती है कि वह पूनम टॉकीज कानपुर में प्रोजेक्टर चलाती थी उसे कानपुर वापस जाना है और गुरु माई उसे नहीं छोड़ा और कहा, "देख बेटा! हम हिजडे की वही नियति है..... दुसरो के सुख में, खुशी में संमेलित हो बधाई गाना बजाना और उनसे इनाम बकशीश पाना।" ⁸

गुरु माई के डेरे में दो दर्जन से अधिक किन्नर थी। वह पायल को प्रतिदिन ताली बजाना ढोलक बजाना नाचना बधाई गाना आदि सीखने की हर संभव कोशिश की गई पर वह डेट की तरह वह सब नहीं कर रही थी तो एक दिन गुरु माई को बहुत गुस्सा आया और उसने उसके गाल पर जोर का थप्पड़ मारा और बोली- "एक हफ्ते से तुम यहां पड़ी पड़ी रोटियां तोड़ रही है। तेरे बाप दादा लाकर रख गए थे क्या? काम नहीं तो खाना नहीं... तो खाना नहीं. बंद कर दो इस हरामजादी को और खबरदार जो किसी ने इसे अपनी को भी पूछा।" ⁹

यह सब सुनकर पायल ने गुरु माई के अखाड़े से भागना चाहा पर वह भाग ना सकी, तभी एक दिन मौके का फायदा उठाते हुये भाग निकली, भागकर वह एक विधायक निवास के पास वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी। विधायक जी ने उसे सिविल अस्पताल में भर्ती कर दिया और साथ ही उसे अपना एक अनुचर भी उसके पास छोड़ दिया था। बाद में पायल कानपुर चली गई है और उसने अपने अम्मा के लिए हुए मकान

में रहने लगी और फिर वह पूनम टॉकीज जाकर प्रोजेक्टर चलाने लगी। अब उसका मन इस काम में नहीं लगता था। अब उसे जुगनू बनकर रहना भी नहीं आता था। उसके मन में पप्पू गुंडे के बदला लेने की भावना बलवती हो गई और उसने पप्पू गुंडे से प्रतिशोध ले लिया और बाद में उसने अपनी दबंग छवि का फायदा उठाकर पायल और सोनी से मिलकर अपना एक अलग ग्रुप बना लिया। पायल ने स्वयं को नशे से दूर रखकर वह स्वयं गुरु की तरह किन्नर गुरु बन गई। जो वर्तमान में गुरु पायल सिंह के नाम से परिचित है। उपन्यास में वर्णित पायल किन्नर की कथा समाज के प्रत्येक किन्नर के संघर्षों की गाथा है। महेंद्र भीष्म ने अपने उपन्यास में पुरुष की कुंठित मानसिकता को उजागर किया। माँ की ममतामयी वात्सल्य प्रेम और तड़प को भी दिखाया गया है। पायल की किस प्रकार अपने बच्चों की रक्षा के लिए समाज से लड़ती है और साथ ही उसकी पितृसत्ताक समाज में उसकी असहायता और पति के आगे असहाय दृष्टि का भी वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में पायल के माध्यम से लेखक संकीर्ण घेरे से बाहर आकर पायल को शिक्षा प्राप्त कर रोजगार पाने का पायल का आशावादी दृष्टिकोण भी सराहनीय है। जुगनू से लेकर पायल बनने की अपनी मौजूदा स्थिति में पहुँचने के लिए कई तरह के संघर्षों का सामना करना पड़ता है किंतु पायल ने कभी हार नहीं मानी और वह अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ती रही उसे हर कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है भीख माँगना, रेलवे स्टेशन पर दातुन बेचने भिखारी के साथ बैठकर खाना, चाय की टपरी पर बर्तन माँजना तथा थिएटर में प्रोजेक्ट चलाने के काम के साथ-साथ किन्नर टोली में नाचना गाना एवं बधाई माँग कर जी भी क्या चलाना तथा आर्केस्ट्रा में काम करते हुए अंततः किन्नर गुरु बन जाना एक संघर्ष में सफल जीवन की कहानी है।



अतः महेंद्र भीष्म ने 'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर समुदाय के जीवन को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में किन्नर समाज की वास्तविकता को बहुत ही संवेदनशील तरीके से दर्शाया गया है। इस उपन्यास में केवल किन्नर समाज की पीड़ादायक स्थिति और संघर्ष को ही नहीं व्यक्त किया बल्कि किन्नर समाज में व्याप्त अंधविश्वास उनके अंतर्विरोध, आपसी रंजिश, अशिक्षा, रूढ़ियाँ तथा सामाजिक व्यवस्था का बारीकी से चित्रण किया गया है। यह उपन्यास किन्नर समुदाय के प्रति समाज की सोच को बदलने में मदद करता है। 'मैं पायल' उपन्यास सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह उपन्यास काल्पनिक कथा पर आधारित न होकर किन्नर की वास्तविक पीड़ा की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। भाषा और शिल्प के स्तर पर उपन्यास बेहद सफल है। वाक्य संरचना और शब्द चयन में कोई कमी नहीं मिलती बल्कि प्रचलित शब्दों का बहुत बेबाकी से प्रयोग किया गया है। कुल मिलाकर हिंदी में अब तक लिखे गए गिनती के उपन्यासों में इस जीवनी परक उपन्यास का विशेष रूप से किन्नर विमर्श को केंद्र में रखकर लिखा गया यह उपन्यास बेहद महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साहित्यिक दृष्टिकोण में ध्यान रखकर उम्मीद है वह दिन जल्द आएगा जब समूचे किन्नर समुदाय को समाज में पूरी तरह से मान सम्मान मिलेगा और सामाजिक बंधनों के सामान्य लोगों के साथ वे भी अपने आत्मीयता से कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। किन्नर विमर्श का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि किन्नर को बिना किसी सामाजिक धार्मिक चश्मे के उन्हें मनुष्य की दृष्टि से देखा जाये और उन्हें चुनने की आजादी मिले।

उपसंहार:

मैं पायल उपन्यास का मूल केंद्र 'पहचान की तलाश' है। लेखक ने यह बखूबी दर्शाया है कि एक किन्नर के लिए 'स्व' की पहचान का संकट केवल लैंगिक नहीं बल्कि सामाजिक, मानसिक और वैधानिक भी है। जन्म लेते ही बालक को शारीरिक भिन्नता के कारण परिवार का त्याग स्कूल में भेदभाव की समस्या तथा समाज में अलग श्रेणी में डाल दिया जाता है और यही से उसके अस्तित्व का संघर्ष प्रारंभ होता है। महेंद्र भीष्म द्वारा रचित मैं पायल उपन्यास में पायल अपनी मूल पहचान को स्वीकार करते और समाज द्वारा थोपी गई पहचान 'हिजड़ा' के रूप में दोनों के बीच जीवन भर झूलते रहती है। साथ ही परिवार में रोज की प्रताड़ना, भाई की मार, लोक क्लास और सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर माता-पिता द्वारा पितृ सत्तात्मक व्यवस्था के कारण त्यागना मानसिक रूप से पायल को तोड़ देता है। सामाजिक बहिष्कार के कारण शिक्षा और रोजगार से वंचित रहने के कारण पायल जैसे लोग भिक्षावृत्ति और बधाई परंपरा तक सीमित हो जाते हैं। समाज में दूसरी और किन्नर लोगों की डेरा संस्कृति के लोग उन्हें संरक्षण और अपने डेरा संस्कृति के आधार पर नाम तो देते हैं पर उन्हें मुख्य धारा से कटकर एक अलग दुनिया में कैद कर देते हैं। शोधले का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि कानूनी थर्ड जेंडर की मान्यता मिलने के बावजूद भी सामाजिक धरातल पर उनकी स्थिति में कोई क्रांतिकारी बदलाव नहीं आया है। शिक्षा रोजगार और सम्मानजनक जीवन आज भी उनके लिए एक सपना के समान है। लेखक ने 'मैं पायल' उपन्यास के माध्यम से इस सामाजिक व्यवस्था की विफलता पर कड़ा प्रहार किया है। विश्वविद्यालय के माध्यम से यह प्रमाणित होता है कि किन्नर समुदाय को मुख्य धारा में लाने के लिए केवल कानून पर्याप्त नहीं, बल्कि समाज के हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है। यह



उपन्यास केवल इस समुदाय के 'पहचान के संकट' को रेखांकित करता है बल्कि उनके लिए एक गरिमा पूर्ण भविष्य की भी मांग करता है। महेंद्र भीष्म ने मैं पायल उपन्यास के माध्यम से इस दायित्व का निर्वहन अत्यंत साहस और ईमानदारी के साथ किया है। कुल मिलाकर हिंदी में अब तक लिखे गए गिनती के उपन्यासों में इस जीवनी पर उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. मैं पायल - महेंद्र भीष्म, २४
2. वही - पृष्ठ , २०
3. वही - पृष्ठ ३६
4. वही - ३९
5. वही - पृष्ठ ६२
6. वही- पृष्ठ क्र. ७७, ७८
7. वही, पृष्ठ- ९६
8. वही -पृष्ठ ९५
9. वही -पृष्ठ ९७